International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 31-05-2019; Accepted: 02-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 04-05

'मैला आंचल' में बीजक के पद

योगेश कुमार साहू
शोधार्थी साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

प्रस्तावना

'मैला आंचल' के रचनाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' जी हैं। इस उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 9 अगस्त, 1957 है। 'मैला आंचल' एक आंचलिक उपन्यास है। रेणु जी इस उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं– ''इसमें फूल भी है शूल भी, कीचड़ भी है चंदन भी, सुंदरता भी है कुरूपता भी। मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''[1] 'मैला आंचल' उपन्यास का कथा–क्षेत्र बिहार राज्य के पूर्णिया जिला का मेरीगंज गाँव है। इस गाँव के एक ओर नेपाल तथा दूसरी ओ पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल है।

मेरीगंज ऐसा गाँव है जिसमें बारहों वर्ण के लोग निवास करते हैं। रेणु जी के इस उपन्यास में मेरीगंज मठ भी है, जिसमें महंत सेवादास, लक्ष्मी कोठारिन, रामदास उस मठ में रहते थे, जो बीजक के पद का गायन करते रहते हैं। लक्ष्मी अपनी बातों में भी सतगुरु साहेब के पदों को गाया करती है।

महंत सेवादास प्रतिदिन ब्रह्मबेला में उठते है, साथ में लक्ष्मी तथा रामदास भी उठ कर प्रातः बीजक के पदों का गायन करते हैं–

''जागहु सतगुरु साहेब, सेवक तुम्हरे दरस को आया जी
जागहु सतगुरु साहेब।
भोर भयो भव भरम भयानक भानु देखकर भागा जी,
ज्ञाना नैन साहेब के खुलि गयो, थर–थर काँपता माया जी
जागहु सतगुरु साहेब.... ।''[2]

मठ में सत्संग भी होता है जिसमें महंत साहेब साधुओं और शिष्यों को अपनी वाणी से उनके अज्ञान, अंधकार को दूर करते हैं–

''...सतगुरु सेवा सत्य करि माने सत्य विचार।
सेवक चेला सत्य सो जो गुरु वचन निहार।।''[3]

उसके पश्चात् महंत साहेब कुण्डलनीय जागरण के सातो चक्र का इस पद के माध्यम से परिचय देते हैं–

''प्रथम चक्र आधार कहावे गुद स्थल के माँही
द्वितीय चक्र अधिष्ठान कहिए लिंगस्थल के माँही।
तृतीय चक्र मणिपूरण जानो नाभी स्थल...।।''[4]

मेरीगंज गाँव में कांग्रेसी कार्यकर्त्ता बलदेव जी भी रहते हैं, जो बीजक के पद पढ़ा करते हैं। बाद में वह कंठी भी धारण कर लेते हैं, बीजक का पाठ करते हैं–

''...बीजक बतावे बित को
जो बित गुप्ते होय,
शब्द बतावे जीव को
बूझे बिरला कोय।''[5]

महंत साहेब की मृत्यु होने पर सबसे पहले बीजक का कार्यक्रम किया जाता है, उसके बाद महंत साहेब को माटी देते हैं–

''माया जाल बिखंडने सुर गुरु दुख परहरता
सरबे लोक जनाज जेन सततं
हिया लोकिता.... ।''[6]

महंत साहेब को माटी देने के बाद रामदास खंजड़ी बजा–बजा कर निरगुन पद गाते हैं–

''कहवाँ से हंसा आओल, कहवाँ समाओल हो राम,
कि आहो रामाहो, कोन गढ़ कयल मोकाम, कवन लपटाओल हो राम।''[7]

महंत सेवादास की मृत्यु होने पर मठ सुना–सुना लग रहा है, इस पर लक्ष्मी कोठारिन महंत साहेब को याद करते हुए यह पद का गायन करती है

''काँचहि बांस के पिंजड़ा,
जामें दियरो न बाती हो,
अरे हंसा उड़ल आकाश
कोई संगो न साथी हो।''[8]

महंत सेवादास की मृत्यु हो जाने के बाद मेरीगंज मठ का महंत रामदास बनता है। रामदास जी खँजड़ी अच्छे से बजाता है। महंत सेवादास की मृत्यु के बाद मठ में भजन, बीजक पाठ और सत्संग लक्ष्मी संभालती है

''सन्तों हो, करूँ बँहिया वल अपनी
छाडूँ बिरानी आस।
सन्तों हो, जिहिं अँगना नदिया बहै,
सो कस मरे पियास ! हो सन्तों, सो कस मरे पियास।''[9]

रामदास का चित्त चंचल हो जाता है और माया में घिर जाता है और लक्ष्मी कोठारिन पर बुरी नज़र डालते हैं। इस पर लक्ष्मी के द्वारा अपने बचाव के लिए लात मारती है, जिससे रामदास गिर पड़ता है। इस पर रामदास पश्चाताप करते हुए कहते हैं–

''सन्तो अचरज भौ एक भारी
पुत्र धयल महतारी
एके पुरुष एकहि नारी
ताके देखु विचारी।''[10]

लक्ष्मी बालदेव जी से आकर्षित होने लगती है और बालदेव जी के साधु स्वभाव देख कर लक्ष्मी कहती है–

''बिरह की ओदी लाकड़ी

सपुजै और घुघुआए।
दुख से तबहिं बाचिहौं
जब सकलौ जरि जाए।।''[11]

कोठारिन लक्ष्मी दासिन को रात में नींद नहीं आने पर वह बीजक का पाठ करती है

''जाना नहिं बूझा नहिं
समुझि किया नहीं गौन।
अन्धे को अन्धाा मिला
राह बतावे कौन।''[12]

लक्ष्मी कोठारिन को बालदेव जी से प्रेम हो गया है इस कारण लक्ष्मी बालदेव जी को संकेत करते हुए कहती है कि बालदेव तो बड़े शर्मिले हैं, वह एकांत में बात करने से डरते हैं। थर–थर काँपने लगते हैं, लज्जा से या डर से नहीं पता, लेकिन लक्ष्मी अपने मन की बात बताने के लिए विरह की अग्नि में जल रही है और अपनी तड़प को इस प्रकार व्यक्त करती है

''बिरह बाण जिहि लगिया
ओषध लगै न ताहि।
सुसकि–सुसकि मरि–मरि जिवै,
उठे कराहि कराहि।''[13]

लक्ष्मी विरह की अग्नि में जल रही है, वह बालदेव से मिलने को तड़प रही है। वह एक पल सोचती है कि वह बालदेव जी से मिलने जाएगी, लेकिन दूसरे पल सोचती है कि वह मिलने क्यों जाएगी ? यदि बालदेव जी को मेरी जरूरत होगी तो वह मेरे पास आएगा, इसी कथन को लक्ष्मी कहती है

''पानी प्यावत क्या किरो
घर–घर सायर बारि,
तृषावंत जो होयगा
पीवेगा झख मारि।...''[14]

अब बालदेव जी और लक्ष्मी कोठारिन एक साथ रहने लगते हैं। लक्ष्मी कोठारिन अब खँजड़ी स्वयं बजाती है, उसको बालदेव जी देख रहे हैं और कहते हैं कि प्रेमी को देखने की बार–बार लालसा होती है

''ज्वाला बिरह वियोग की, रही कलेजे छा–य।
प्रेमी मन मानै नहीं, दरसन से अकुला–य।।''[15]

लक्ष्मी अब मेरीगंज मठ से अलग हो गई है और बालदेव जी के साथ अले रहने लगी है। लक्ष्मी सत्संग करती है, उसी समय लक्ष्मी को पारबती की माँ जिसकी हत्या हुई थी उस दृश्य का स्मरण होता है, जिससे लक्ष्मी रोने लगती है और कहती है

''गृह आँगन बन गए पराए
कि आझो सन्तो हो।
तुक बिनु कंत बहुत दुख पाए....
एके गृह एक संग में, बिरहिण संग कंत
कब प्रीतम हँस बोलिहैं जोह रही मै पंथ।''[16]

'मैला आंचल' उपन्यास में रेणु जी ने सद्गुरु कबीर की महान रचना 'सद्ग्रंथ बीजक' की पंक्तियों को अपने पात्रों के माध्यम से इस उपन्यास में उसका उल्लेख तो किया है, साथ ही रेणु जी ने लोकगीत, लोक–संस्कृति तथा लोक–नाट्य को भी बड़े ही सुंदर रूप में इस उपन्यास में पस्तुत किया है। लोकगीत इस उपन्यास का प्राण है, जिससे स्पष्ट रूप से इस उपन्यास में आंचलिकता झलकती है। रेणु जी ने ''लोकगीतों, पर्व–त्यौहारों तथा ऋतुओं के उत्सवों का जीवान्त प्रस्तुत किया है।''[17] राजनैतिक चेतना के लिए सुराजी गीत–गायन भीा अपने पात्रों के माध्यम से बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

ग्रामीण लोक–नाट्य को भी रेणु जी ने अपने उपन्यास में स्थान दिया है, जैसे बिदापत नाच, सिमरबनी गाँव का ठेठर कम्पनी, खुरंगा सदाब्रिज की कथा ये सभी लोक–नाट्य को अपने उपन्यास में जीवंत प्रस्तुत किया है। होली पर्व का भी वर्णन रेणु जी ने किया है। मेरीगंज के लोग होली पर्व को किस तरह से मनाते हैं। इस पर्व में बड़े–छोटे का कोई भेद नहीं रहता है और एक साथ मिलकर आंचलिक लोकगीत का गायन करके इस पर्व को मनाते हैं। 'मैला आंचल' में ''कथा का अंत इस आशामय संकेत के साथ होता है कि युगों से सोई हुई ग्राम–चेतना तेजी से जाग रही है।'' [18]

संदर्भ–ग्रंथ

1 रेणु, फणीश्वरनाथ. मैला आंचल. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, चालीसवाँ संस्करण, 2017; भूमिका से.
2 वही; पृ. 25.
3 वही; पृ. 26.
4 वही; पृ. 36.
5 वही; पृ. 49.
6 वही; 49.
7 वही; 49.
8 वही; 50.
9 वही; 127.
10 वही; 128.
11 वही; 130.
12 वही; 208.
13 वही; 208.
14 वही; 208.
15 वही; 285.
16 वही; 285.
17 वही; ....
18 वही; भूमिका अंतिम पृष्ठ.